विनय–वात्सल्य में परस्परता आवश्यकः आचार्य महाश्रमण

केलवा में चातुर्मास, पर्युषण महापर्व का चौथा दिन वाणी संयम दिवस के रुप में मनाया, श्रावक समाज को दी वाणी पर संयम रखने की प्रेरणा, प्रवचन सभा में मौजूद रहे हजारों श्रद्धालु

केलवाः 29 अगस्त

तेरापंथ समाज के 11वें अधिष्ठाता आचार्यश्री महाश्रमण ने श्रावक–श्राविकाओं से आह्वान किया कि वे सदैव विनम्र बनने का प्रयास करें और अपने वात्सल्य को इस तरह से फैलाएं कि सभी में अपनापन की भावना बनी रहें। जीवन में नैतिकता, संयमता, शालीनता और व्यवहार में मधुरता हमारा नेक मार्ग प्रशस्त करती है। जिस मनुष्य के चित्त में निर्मल का भाव नहीं हैं और जो वर्तमान जीवन के भौतिकता के सुख को छोड नहीं सकता। उसे मोक्ष मार्ग की प्राप्ति नहीं होती। इसके लिए मनुष्य को माया– मोह के परित्याग के साथ निर्मल भाव से ध्यान आराधना करनी होगी तभी उसका मानव जीवन सार्थक हो सकेगा। आचार्यश्री ने उक्त उद्‌गार सोमवार को यहां तेरापंथ समवसरण में चल रहे चातुर्मास में पर्युषण महापर्व के दौरान वाणी संयम दिवस के अवसर पर देशभर के विभिन्न प्रांतों से आए हजारों श्रावक समाज को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने विनय और वात्सल्य में परस्पर संबधों को प्रतिपादित करते हुए कहा कि हमें यह सोचने की आवश्यकता है कि इन दोनों के संबधों से हमारे जीवन पर क्या असर पड रहा है। भगवान महावीर की आध्यात्म यात्रा के प्रसंग को प्रस्तुत करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि हृदय सम्राट भगवान महावीर स्वामी ने परमात्मा को प्राप्त करने से पूर्व 27 जन्मों का सफर तय किया था। उनका तीसरा जन्म राजकुमार मरीच के रुप में हुआ। उस समय उन्हें इस बात का अहसास हुआ कि वे जैन समाज के अंतिम तीर्थंकर, चक्रवती और वासुदेव बनेंगे। इस बात को सुनने के बाद उनमें अहंकार का भाव आ गया। बाद में साधना के माध्यम से उनके मन में बोध हुआ और अहंकार का भाव मन से दूर हुआ। उन्होंने जीवन में एक साथी की महत्ती आवश्यकता परिभाषित करते हुए कहा कि जीवन का यह सफर काफी लंबा है। इस दौरान छोटी–बडी बीमारियां शरीर को घेरकर उसे आक्रांत बना देती है। हालांकि बीमारी शरीर को कष्ट नहीं देती। कभी–कभी यह जीवन का बोध भी करा सकती है। यह हमें प्रेरणा देने वाली बन जाए तो अच्छी भी मानी जा सकती है। बीमारी के साथ अन्य सुख और दुःख में कदम से कदम मिलाकर चलने के

लिए एक साथी की आवश्यकता होती है। इस कमी को दूर करने के लिए सांसारिक दुनियां में शादी सरीखा संस्कार कराया जाता है। व्यक्ति को एक जीवन साथी मिलता है। साधु–साध्वियों को भी चाहिए कि वह चित्त समाधि के रुप में अपने साथ एक साथी अवश्य रखें। यह उनके जीवन में न केवल एक सहयोगी की भांति खडा रहेगा बल्कि उसके व्यवहार से अपनापन झलकेगा।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ भी हमेशा अपने साथ एक सखा रखने के पक्षधर रहे है। उनका मानना था कि जीवन में यकायक आने वाली कठिनाईयों का सामना करने के लिए एक सखा के सहारे लडा भी जा सकता है। हालांकि अकेले रहकर भी जीवन को बिताया जा सकता है, लेकिन इसमें यदा कदा सामने आने वाली समस्याओं से मुकाबला करने में दिक्कत आ सकती है। यह निरपेक्षता की साधना है। इसकी साधना करना भी अच्छा है। उन्होंने राजकुमार मरीचि के बीमार पडने के दृष्टांत को प्रस्तुत करते हुए कहा कि उन्हें भी बीमारी के दौरान इस बात का बोध हुआ कि जीवन में एक चेले का साथ तो होना ही चाहिए। रोग से छुटकारा मिलने के बाद उन्होंने भी एक चेला बनाया। पंडितों का आश्रय और लता को भी आलंबन चाहिए।

अपने से छोटे की भी बात सुने

आचार्यश्री ने कहा कि व्यक्ति को प्रायः अपने से उम्र में छोटे व्यक्ति की बात का मान रखने की आदत विकसित करनी चाहिए। कभी ऐसा होता है कि जो बात बडे नहीं कह पाते उससे ज्यादा वजन वाली बात छोटे कह जाते है और वह बात हमारे जीवन को सुधार देती है। हमें यह सोचने और मनन करने की आवश्यकता है कि ऐसा करने से हमारे जीवन में विनयशीलता आएगी। वह सदा के लिए अपना बन जाएगा तथा जीवन की विकट परिस्थितियों में हमारे साथ रहेगा।

उन्होंने कहा कि मानव जीवन बहुत दुर्लभ है। कुछ विरले ही ऐसे होते है, जिन्हें पुनः मानव जीवन व्यतीत करने का मौका मिलता है। भगवान महावीर ऐसे मनुष्य थे, जिन्हें एक नहीं, दो नहीं बल्कि 27 मर्तबा मनुष्य का जीवन मिला और पांचवे भव में एक ब्राह्मान के यहां जन्म लिया। आगे चलकर वे परमात्मा बने। इसके लिए साधना की महत्ती आवश्यकता हैं। उन्होंने कहा कि व्यक्ति को कभी भी कोई काम करते समय फल की इच्छा मन में नहीं रखनी चाहिए। ऐसा भाव आने से हालांकि उसे फल मिलता हैं, लेकिन उसमें समय लग जाता है।

संयमित वाणी रत्न के समान

आचार्यश्री ने पर्युषण महापर्व के अन्तर्गत सोमवार को वाणी संयम दिवस पर श्रावक–श्राविकाओं से आह्वान किया उन्हें सदैव अपनी वाणी पर संयम रखना चाहिए। कटु वचनों के प्रयोग से आपसी संबंधों में कटुता आती है। वचन सत्य हो और मधुर हो, यह आवश्यक है। हमारा स्वभाव निर्मल होगा तो परिवार में भी शांति की अनुभूति होगी। यह हमारा सौभाग्य है कि हमें वाणी की शक्ति मिली है। अनेकों व्यक्ति ऐसे होते है, जिन्हें इस शक्ति का अहसास तक नहीं होता। मनुष्य के साथ पशुओं में भी वाणी की शक्ति होती है, लेकिन वह मनुष्य के वचनों के अनुरुप अपन बात को प्रकट नहीं कर पाता। इसलिए ईश्वर ने हमें जो शक्ति प्रदान की है उसका सदुपयोग करने का प्रयास करें। कहां इसका दुरुपयोग न हो जाए। इसका हमेशा ध्यान रखने की आवश्यकता है।

गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी ने भी हमेशा अपनी वाणी का संयमित रखने की बात कही है। उन्होंने कहा कि साधना के क्षेत्र में संयम का महत्व है, पर इसकी साधना कठिन होती है। उन्होंने वाणी को रत्न की संज्ञा देते हुए कहा कि हमें अपने मुख से निकलने वाली बातों का उच्चारण प्रायः सोच समझकर करना चाहिए। कही ऐसा न हो कि जिस शब्द को हमने दूसरों के लिए प्रवाहित किया है। उसे सुनकर सामने वाला नाराज हो जाए और संबंध खराब हो जाए। उन्होंने बेवजह बोलने की आदत को गलत मानते हुए कहा कि अनावश्यक न बोलना मेरे हिसाब से महतवपूर्ण है। जिन्दगीभर का वाणी संयम अति महत्वपूर्ण है। इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। यह हमें नुकसानों से बचा सकता है। इसके लिए हमें आत्म साधना करनी होगी। साथ ही व्यवहार के लिए वाणी संयम का अभ्यास करने की आदत डालने की आवश्यकता है।

कर्म में आने का पहला क्षण कर्मवाद

मंत्री मुनि सुमेरमल ने कहा कि कर्म जब से चलना प्रकल्पित होता है। तब मानना चाहिए कि कर्म उदय होता है। व्यवहार की भाषा भी यही है। इसे भगवान ने भी स्वीकारा है। कर्मवाद कर्म में आने का पहला क्षण आता है। वह आगे–आगे चलता रहता हैं। इसमें भाषा को लेकर कोई दोष नहीं है। चले वह महत्वपूर्ण नहीं है। पूरा हुआ वह महतवपूर्ण है। भगवती सूत्र में भी इसी सिद्धांत के साथ प्रारंभ होता है। जो कार्य प्रारंभ होता है उसी की प्रक्रिया में संलग्न हो जाए। यह एक प्रक्रिया है। भगवती सूत्र में जो प्रसंग आता है उसमें गौतम स्वामी से संबंधित उत्तर दिया जाता है। वे चार ज्ञान के धारक और 14 पूर्वधर थे।

उन्होंने कहा कि सुदर्वास्वामी के आगम आज अपने लिए है। 11 गण धरों में सुदर्वास्वामी की विचारधारा है। इन्होंने भगवती के जिन ग्रंथ गौतम प्रेक्ष्या में स्वयं को प्राथमिकता देने की बजाय गौतम स्वामी को ही महत्व दिया था। इस ग्रंथ में तात्विक मीमांशा, तत्व आराधना को प्रश्नोत्तर शैली में प्रस्तुत किया गया है। इसमें अधिकत्तर प्रश्न गौतम स्वामी को आगे रखकर किए गए है। यह विस्तार वाणी में किया गया है। पार्श्वनाथ परपंरा में पूर्वो का काफी महत्व देखने को मिलता है। उनकी परपंरा कालांतर में आगे चलती रही। आज भी कुछ लोग इसी परपंरा को मानते है। इसके पीछे उनका यह मानना है कि उनकी पृथक से पहचान हो सके। मंत्री मुनि ने कहा कि देशकाल में आचार्य स्थिति को देखते हुए बडा निर्णय करने की क्षमता रखते है। इससे पहले इस बात का विवेचन करना आवश्यक है कि उनके द्वारा किए जा रहे निर्णय से समाज का अहित न हो सके। समाज विकास की धारा में प्रवाहित हो। इसी के अनुरूप निर्णय करने की आवश्यकता है।

साध्वी को दी श्रद्धाजंलि

आचार्यश्री ने प्रवचन के अंत में श्रीडूंगरगढ में रविवार दोपहर को संथारे के बाद देलोकगमन हुई साध्वी लिछमा को श्रद्धाजंलि देते हुए उनके जीवन का वृतांत प्रस्तुत करते हुए बताया कि संसार में जो आता है उसे एक दिन तो जाना ही है। यह साध्वी हमारे धर्मसंघ की एक सदस्य थी, जो विदा हो गई। चूरू जिले के राजलदेसर में 1983 को जन्मी इस साध्वी ने 17 वर्ष की आयु में इसने गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी के सान्निध्य में दीक्षा ली थी। इस साध्वी ने 23 अगस्त को संथारा लिया था। स्वर्ग गति को प्राप्त हुई इस साध्वी के प्रति लोगस्य का ध्यान कर साधु–साध्वियों और श्रावक समाज ने श्रद्धाजंलि अर्पित की। इस अवसर पर मुनि जितेन्द्र कुमार ने अपनी अठाई की तपस्या पूर्ण होने पर आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और प्रत्याखान प्राप्त किया। वहीं आचार्यश्री ने स्नेहा गुंदेजा की 11वीं तपस्या पर प्रत्याखान दिया। प्रवचन स्थल पर आज हजारों श्रावक–श्राविकाएं मौजूद थी। पर्युषण महापर्व के दौरान धार्मिक विचारों का रसस्वादन करने के लिए श्रावक समाज उमड रहा है। संयोजन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

जुआ खेलते पांच पकडे

केलवाः 29 अगस्त

केलवा पुलिस ने रविवार रात को एक मकान में छापा मारकर ताश के पत्तों से जुआ खेल रहे पांच लोगों का रंगे हाथों पकड लिया। उनके कब्जे से 22 हजार 850 रुपए की राशि जब्त की गई। पुलिस सभी को पकड कर थाने लाई और उनके खिलाफ प्रकरण दर्ज किया।

थानाधिकारी महावीर शर्मा ने बताया कि रात को मुखबिर की सूचना पर पिछावला माइंस के समीप स्थित एक मकान पर पुलिस दल ने छापा मारा और मौके से लोकेश पुत्र पुखराज सांवरिया, आरिफ पुत्र युसूफ मोहम्मद, रमेश पुत्र भंवरलाल पालीवाल निवासी केलवा, रमेश पुत्र रोडीलाल माली निवासी राजनगर, गोरू पुत्र लक्ष्मीचंद खटीक निवासी कलालवाटी राजनगर को पकड लिया और उनके कब्जे से राशि व ताश के पत्ते बरामद किए।

सडक दुर्घटना में एक मरा

केलवाः 29 अगस्त

केलवा थाना क्षेत्र के पडासली गांव के निकट रविवार रात को हुए एक सडक दुर्घटना में एक अधेड की मौके पर ही मौत हो गई। जानकारी के अनुसार गुगली निवासी जोधा पुत्र धन्ना गुर्जर (55) रविवार रात को बाईक पर मादडी देवस्थान से चारभुजा की तरफ आ रहा था कि सामने से आ रहे ट्रेलर ने अधेड को ट्रक मारी जिससे अधेड कि मौके पर मौत हो गई। पुलिस ने ट्रेलर को जब्त कर फरार ट्रक चलाक के खिलाफ जाच शुरू कर दी।